'शुभ' शब्द के प्रयोग कि, विभिन्न विधाए

डॉ. अतुल म. महाजन
तत्वज्ञान विभाग
रंणुका कॉलेज, नागपूर

मानव जीवन में मनुष्य का विभिन्न वस्तुओं के साथ संबंध आता है उन वस्तुओं के प्रति मनुष्य के मन मे आकर्षण उत्पन्न होना सामान्य है। उन वस्तुओं का स्वरूप कैसा है? उनमें कौनसे गुणधर्म है? उनका आपस में संबंध है या नही? यदि होगा तो वह संबंध किस प्रकार का होगा? आदि विभिन्न प्रश्न मानव से विचलित रहता है। इन प्रश्नों के बारे एक प्रकार का कुतुहल मानव को होता है और वास्तविक रूप से इसी कुतुहल से उन वस्तुओं के प्रति ज्ञान का प्रारंभ होता है। मनुष्य के ज्ञान की शुरूवात इसी प्रकार के कुतुहल से, एक प्रकार के आश्चर्य से होती है। इसिलिए आज अस्तित्व मे दिखायी देने वाले शास्त्र भी इसी प्रकार के आश्चर्य और उत्सुकता से निर्माण हुये दिखाई देते है। वसुंधरा या भुमी के प्रति आकर्षण के कारण भूगर्भशास्त्र (Geology) का निर्माण हुआ। उसी प्रकार वनस्पति के प्रति आकर्षण के कारण वनस्पतीशास्त्र (Botany) और प्राणीयों के प्रति आकर्षण के कारण प्राणीशास्त्र (Zoology) का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार मनुष्य के मस्तिक को पडे प्रश्नों के समाधान स्वरूप अन्य सभी शास्त्रों की निर्मिती हुई है।

जीस प्रकार भौतिक वस्तू के प्रति, बाह्य विश्व के वस्तूओं के प्रति मनुष्य को आकर्षण था उसी प्रकार मनुष्यको स्वयं के प्रति आकर्षण निर्माण होना स्वाभाविक था। और स्वयं के प्रति आकर्षण के कारण जीन शास्त्रों का उदय हुआ उनमें मानसशास्त्र (Psychology)] समाजशास्त्र (SocioloGy)] तर्कशास् (Logic) नीतिशास्त्र (Ethics) आदि शास्त्रों का अंर्तभाव होता है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते है की आश्चर्य के कारण ज्ञान की शुरूवात होती है। प्लेटो ने भी कहा है की "Philosophy begins in wonder"।

मानवी जीज्ञासा से उत्पन्न प्रश्न और समस्याओं का वर्गीकरण दो वर्ग मे किया जाना चाहिए। जीन समस्याओं का समाधान प्राप्त करने में मनुष्य त्रयस्त होता है, एसी समस्याओं का एक वर्ग। समस्याओं का दुसरा वर्ग एसा होगा की इस वर्ग की समस्याओं का विचार करते समय समस्या का एक घटक इस दृष्टि से मनुष्य को भुला नही जा सकता। सामाजिक शास्त्र की समस्याए इसी वर्ग की होती है। एसी समस्याओं को मानव सापेक्ष समस्या कहा जा सकता है। नीतिशास्त्र भी एक सामाजिक शास्त्र है।

मनुष्य विचारशिल प्राणी होने के कारण वह स्वयं के कृती के संदर्भ में और जीवन के लक्ष्य के प्रति सदैव विचारशिल होता है। जीवन विषयक विभिन्न समस्याओं के बारे में वह हमेशा जागृत होता है। मनुष्य के लिए क्या उचित है? मनुष्य के जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है? वह कौन से साधनों से प्राप्त हो सकता है? व्यवहारीक जीवन में कौनसी

कुती योग्य या उचित कृती कहना चाहिए? आदि प्रश्नों के हल के लिए मनुष्य सदैव प्रयत्नशिल रहता है।

मनुष्य के जीवन से संबंधित उपरोक्त प्रश्नों का विचार समय–समय पर और विस्तुत रूप से किया गया है। दर्शनशास्त्र में भी 'नीतिशास्त्र' इस शाखा में संबंधित प्रश्नों पर विस्तुत और तर्कसंगत रूप से विचार किया गया है।

नीतिशास्त्र का मुख्य उद्देश मनुष्य के कृती का उचित मुल्यमापन करना है। अर्थात, नीतिशास्त्र मे जीन प्रश्नों का विचार किया जाता है, वे प्रश्न मानवी व्यवहार से, कृती से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होते है। नीतिशास्त्र की इस विधा को 'मानकीय नीतिशास्त्र' (Normative Ethics) कहते है। संक्षिप्त मे हम कह सकते है की, मानकीय नीतिशास्त्र में मानवी आचरण का अध्ययन किया जाता है।

मानकीय नीतिशास्त्र का मुख्य उद्देश मनुष्य और उसके कर्मो के लिए कुछ विशेष नियमों, सिध्दांतों या आदर्शों का युक्तिसंगत प्रतिपादन करना है। यह हमे बताता है कि मनुष्य के लिए स्वतः साध्य शुभ क्या है, उसके कौन से कर्म उचित है, अपने प्रति और दुसरों के प्रति उसका कर्तव्य क्या है, शुभ, अशुभ तथा उचित–अनुचित अथवा कर्तव्य का निर्धारण किन नैतिक सिध्दांतों के आधारपर किया जा सकता है। मानव जीवन के लिए परम शुभ तथा कर्तव्य के सम्बन्ध में सामान्य एवं सार्वभौमिक नैतिक सिध्दांतों का प्रतिपादन करना मानकीय नीतिशास्त्र का उद्देश है। मानकीय नीतिशास्त्र में कृती के मूल्यमापन के संदर्भ में विभिन्न सिध्दांत दिखाई देते है। उदाहरणार्थ सुखवाद एक मानकीय नैतिक सिध्दांत है जो हमे बताता है कि सुख ही मनुष्य के लिए परम शुभ है, अतः सुख के आधार पर ही उसके कर्मों के औचित्य तथा कर्तव्य का निर्णय किया जा सकता है। उसी प्रकार उपयोगितावाद, विकासवाद, अंतःप्रज्ञावाद और कान्ट का कर्तव्यवाद इत्यादी सभी सिध्दांत मानकीय नैतिक सिध्दांत है।

मानकीय नीतिशास्त्र मे मानवी आचरण का अध्ययन करने के जीस भाषा का प्रयोग किया जाता है, दुसरे शब्दों में मानकीय नीतिशास्त्र के सिध्दांत जीस भाषा के माध्यम से प्रतिपादीत किये जाते है, उस भाषा को 'नैतिक भाषा' की संज्ञा दी जाती है। अर्थात नैतिक भाषा का मनुष्य के कती से अनिार्य सम्बन्ध होता है। इस नैतिक भाषा के माध्यम से हम मनुष्य के कृती से बारे मे निर्णय व्यक्त करते है।

नैतिक भाषा का उपयोग करते समय वह निर्दोष होनी चाहिए। सदोष भाषा के उपयोग से प्रश्नों का हल तो प्राप्त नही होगा, अतः समस्याओं की वृध्दि होने की संभावना बढ जाती है। जैसे कि, व्यवहार में हम कहते है कि, उसने वह कृती नही करनी चाहिए थी', 'किसी को सहकार्य करना उचित है', 'उस मनुष्य का चरित्र अच्छा है', चोरी करना अनुचित है'। इस प्रकार के नैतिक निर्णय देने के बाद इन निर्णयों से सहमत न रहने वाले व्यक्ती भी हमे दिखाई देते है। किसी व्यक्ती को मै अच्छा कहता हु तो उस व्यक्ती को मेरा मित्र बुरा कह सकता है।

इस समय 'अच्छा' (Good) और 'बुरा' (Bad) इन शब्दों का जो हम प्रयोग कर रहे है उन शब्दों का हम विभिन्न अर्थ से प्रयोग कर रहे है। जब तक हमे इन शब्दों का अर्थ ज्ञात नही होगा, जब तक इन शब्दों के बारे मे हम एक मत नही होगे तब तक एक ही कथन उस व्यक्ती के बारे में हम नही कर सकते है। अर्थात नैतिक पदो ंके सदर्भ में दिखाई देने वाली असहमती या मतभेद का मुख्य कारण नैतिक पदो ंके प्रयोग में अंतर्भूत है।और यह बात नीतिशास्त्र को भी लागू होती है। जब तक नैतिक भाषा स्पष्ट नही होगी, तब तक मनुष्य के आचरण का उचित अध्ययन नही किया जा सकता है। इसलिए नैतिक भाषा का स्वरूप स्पष्ट होना आवश्यक है।

नैतिक भाषा अर्थात, नैतिक पदों के अर्थ, स्वरूप और कार्य का स्पष्टिकण, विवेचन नीतिशास्त्र की दुसरी विधा अधिनीतिशास्त्र में विस्तुत रूप से किया गया है।नैतिक पदों का अर्थ, नैतिक पदों का प्रयोग और नैतिक पदों का कार्य स्पष्ट करने के लिए नीतिशास्त्र कि दुसरी विधा अधिनीतिशास्त्र महत्वपूर्ण योगदान देती है।

संक्षिप्त में मानकीय नीतिशास्त्र मनुष्य के आचरण का प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन करता है, तो अधिनीतिशास्त्र मनुष्य के आचरण का अध्ययन करते समय जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, उस भाषा का अध्ययन करता है।

अधिनीतिशास्त्र को 'विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र' अथवा 'आलोचनात्मक नीतिशास्त्र' की संज्ञा भी दी जाती है। अधिनीतिशास्त्र का मुख्य उद्देश मानकीय नीतिशास्त्र के अंतर्गत आने वाले नैतिक निर्णयों तथा नैतिक सिध्दोतों का विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना है। अधिनीतिशास्त्र किसी नैतिक सिध्दांतों या आदर्शों की स्थापना नही करता अपितु नैतिक निर्णयों के स्वरूप का विश्लेषण करना और ऐसी विधीयों की खोज करना है जिनके व्दारा इन निर्णयों के औचित्य–अनौचित्य का निश्चय किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. गायधने, सु. वा. मूल्य निवेदन, नागपूर.
२. गायधने, सु. वा. 'मूल्यनिवेदनाच्या सत्यासत्यतेच्या संदर्भात 'चांगले' या पदाच्या स्वरूपाचे चिकित्सक विवेचन', प्रबंध २००२,
३. Stevenson, C. L. Ethics and Language, New Haven, Yale University Press, 1945
४. Frankena, William K. Ethics, Prentice-Hall of India Pvt., Ltd., New Delhi, Second Edition, 1988
५. गायधने, सु. वा. 'मूल्यनिवेदनाच्या सत्यासत्यतेच्या संदर्भात 'चांगले' या पदाच्या स्वरूपाचे चिकित्सक विवेचन', प्रबंध २००२,
६. Frankena, William K. Ethics, Prentice-Hall of India Pvt., Ltd., New Delhi, Second Edition, 1988
७. Hospers, John An Introduction to Philosophical Analysis, Allied Publishers Ltd., New Delhi, First Indian Reprint, 1971